श्लोकसं०-25 24/7/2020 पृष्ठसं०-5

" अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥ "

उत्तर- हिन्दीअनुवाद -
(हे अर्जुन) यह आत्मा अव्यक्त, अचिन्त्य तथा विकार रहित है। अतएव (आत्मा को) इसप्रकार से जानकर तुम शोक नहीं कर सकते।

तात्पर्य-(शाङ्करभाष्य के आधार पर)

भगवान् श्रीकृष्ण ~~प्र~~ आत्मा के संदर्भ में प्रतिपादित करते हैं:-
यह आत्मा अव्यक्त है अर्थात् इसकी अभिव्यक्ति नहीं होती। वस्तुतः यह आत्मा किसी भी इन्द्रिय का विषय नहीं बनता।
चूँकि जो पदार्थ इन्द्रियों का विषय बनता है वह चिन्ता का विषय बनता है। अब चूँकि आत्मा तो इन्द्रियों का विषय बनता ही नहीं। इसप्रकार से यह आत्मा अचिन्त्य सिद्ध हुआ।
जिसप्रकार दुग्ध (दूध) आदि पदार्थ विकृत होकर दधि (=दही) आदि के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं, उसप्रकार आत्मा में किसी भी पदार्थ के सान्निध्य से कोई विकार नहीं आता है। इसप्रकार आत्मा निरवयव तथा अविक्रिय होने से अविकार्य के रूप में मानी जाती है।

आत्मा के स्वरूप को इसप्रकार से जानकर तुम (अर्जुन) भीष्म, द्रोण आदि के विषय में दुःख नहीं व्यक्त कर सकते। ~~तुम~~ तुम्हें ऐसा विचार नहीं रखना चाहिए कि मैं इन सबों को मारनेवाला हूँ तथा ये सारे योद्धा मेरे द्वारा काल के गाल में जा रहे हैं।

श्लोकसं० 13 से 25 - अत्यधिक महत्वपूर्ण है अतएव व्याख्या पर समुचित आत्मा की ~~अमरता~~ नित्यता के संदर्भ में इनका प्रतिपादन आवश्यक है। दृष्टिअपरिहार्य है। सिविलसेवा के पाठ्यक्रमों में व्याख्या के रूप में इसे रखागया है।
(B.P.S.C Main's)